

## Индра-Варуна Ригведа III, 62

ऋग्वेदसंहिता। इन्द्रावरुणसूक्तम्

इमा उं वां भृमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन्।

क॑ त्यदिन्द्रावरुणा यशौ वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः ॥ १ ॥

bhṛmi – подвижный, быстрый; неутомимый;

yuvāvat – принадлежащий вам двоим;

tujuva – приведенный в движение, принужденный;

tyad – этот;

sina n – заготовление, запасы;

अयम् वां पुरुतमौ रयीयज्ञश्चत्तममवसे जोहवीति।

सुजोषाविन्द्रावरुणा मुरुद्दिर्दिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे ॥ २ ॥

puri – многочисленный, обильный;

rayīvant – желающий богатства;

avas n - помощь, защита, поощрение; отрада; желание, потребность;

hava m – зов, крик;

अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्यादुस्मे रुयिर्मस्तः सर्वीरः।

अस्मान्वरूप्त्रीः शरणैरवन्त्वस्मान्होत्रा भारती दक्षिणाभिः ॥ ३ ॥

rayī m, f – богатство;

varūtrī f – защитница, богиня-охранительница;

√av I P. - защищать, помогать; способствовать; желать, любить;

hotrā f – заклинание (тж. персонифицированное), призыв;

bhāratī f – речь, слово; эпитет богини Сарасвати;

बृहस्पते जुषस्वं नो हव्यानि विश्वदेव्य।

रास्व रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥

√juṣ VI Ā.- любить, восхищаться, наслаждаться;

√rā II U. - давать, дарить;

शुचिमैर्बृहस्पतिमध्वरेषु नमस्यत।

अनाम्योज आ चके ॥ ५ ॥

arka m – луч, солнце; гимн, песнопение;

adhvara m – религиозный обряд, жертвоприношение;

ojas n – сила, мощь;

āv/kā Ā. – желать, любить;

वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्।

बृहस्पतिं वरेण्यम् ॥ ६ ॥

adābhya – надежный, верный; с которым нельзя шутить;  
इयं ते पूषनाघृणे सुष्टुतिर्देवं नव्यसी।

अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ॥ ७ ॥

āghṝṇī – жаркий, горячий, раскаленный;  
navyas – новый, свежий;  
तां जुषस्व गिरं मम वाज्यन्तीमवा धियम्।

वधूयुरिव योषणाम् ॥ ८ ॥

√vājaya *den.* U. – быстро бежать, мчаться, нестись; желать добычи, процветания; быть сильным;  
dhī *f* – мысль, взгляд, мнение, ум, знание; религиозное размышление, медитация;  
vadhūyu – любящий жену; жених; сладострастный;  
yoṣaṇā *f* – девушка, молодая женщина;

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति।

स नः पूषाविता भुवत् ॥ ९ ॥

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १० ॥

bhargas *n* - сияние, блеск, великолепие, величие;  
dhī *f* - мысль, взгляд, мнение, ум, знание;  
prāvīḍud *caus.* - двигать, приводить в движение;

देवस्य सवितुर्वर्यं वाज्यन्तः पुरुष्या।

भर्गस्य रातिर्मीमहे ॥ ११ ॥

puraṁdhi *f* – хорошее настроение, воодушевление;  
rāti *f* – благо, милость, дар;  
īmahe – *int. 1 pl. om √i* – просить, молить;

देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः।

नमस्यन्ति धियेषिताः ॥ १२ ॥

suvṛkti *f* – прекрасное восхваление, хвалебный гимн;  
iṣita (*p.p. om √iṣ*) – приведенный в движение, ускоренный, возбужденный;  
सोमौ जिगाति गातुविद्वानामेति निष्कृतम्।

ऋतस्य योनिमासदम् ॥ १३ ॥

gātu, *m* – ходьба, путь, дорога; место, жилище;  
niṣkṛta *n* – сделка, уговор; свидание;  
āśad P. I – сидеть; находить, достигать;  
सोमौ अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पश्वैः।

अनमीवा इष्टस्करत्॥१४॥

amīvā *f* - страдание, мучение, болезнь;  
iṣ *f* - сок, напиток; еда; сила, мощь;

अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमातीः सहमानः।

सोमः सधस्थमासदत्॥१५॥

abhimāti *f* - вражда, преследование; враг;  
sadhastha – присутствующий, находящийся вместе; *n* – дом, родина;

आ नौ मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।

मध्वा रजासि सुक्रत्॥१६॥

gavyūti *f* - пастбище;  
kratu *m* – сила, мощь, способность, разум, дело, жертвоприношение;

उरुशंसा नमोवृथा महा दक्षस्य राजथः।

द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥१७॥

mahan *n* – сила, мощь, величина;  
dakṣa - сильный; деятельный; разумный, правый; *m* воля; деятельность, сила; *nom.pr.* бог Дакша;

गृणना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्।

पातं सोममृतावृथा ॥१८॥

jamadagni *nom.pr.* риши Дамадагни;  
ṛitāvṛdh – укрепляющий закон, увеличивающий благочестие.